MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-33, Vol-02 January to March 2020

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner
www.vidyawarta.com

27) मार्क्सची राज्यमीमांसा
प्रा.डॉ. विठ्ठल दहिफळे, नांदेड ||119

28) मागासवर्गीयांची शैक्षणिक प्रगती : महात्मा फुलेंचा दृष्टीकोन
डॉ. अविनाश दिगंबर फुलझेले, नागपुर ||122

29) भारतातील मंदी (Slowdown in India)
पाटील स्वप्नील माधवराव ||126

30) रोकड विरहित व्यवस्था आणि विमुद्रीकरण धोरणाचे विश्लेषणात्मक अध्ययन
प्रा.डॉ. रविंद्र पुंडलिक पाटील, ता.जि. धुळे ||130

31) हैद्राबाद मुक्ती संग्रामातील मराठवाड्याचे योगदान
डॉ. गिरमकर के. एल., जि.अ.नगर ||134

32) सूरदास का भ्रमर गीत और वियोग श्रृंगार
श्रीमती प्रतिमा चन्द्राकर & श्रीमती सीमा प्रधान, महासमुंद (छ.ग.) ||136

33) युगल साहित्यकार ममता कालिया....
गोपिरेड्डी लीलावती, वरंगल ||139

34) बंजारा लोकगीतों में शराब विरोधी संकेत
डॉ. कल्याण जी. एस., जि. नदिड ||142

35) डॉ. विनय की कविताओं में अभिव्यक्त राजनीति और सामाजिक दर्शन
डॉ. रमेश आडे, जि.उस्मानाबाद ||144

36) रामचरितमानस में मूल्य शिक्षा
डॉ. (श्रीमती) उषा दुबे, ग्वालियर (म.प्र.) ||147

37) माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता के सन्दर्भ में अध्ययन
संजीव कुमार & डॉ० गीता खंडूड़ी, गढ़वाल, उत्तराखण्ड ||151

38) औरंगज़ेब कालीन ज़ामा मस्ज़िद (शाहाबाद, हरदोई) : एक ऐतिहासिक एवं ...
डॉ० श्याम प्रकाश, छपरा ||156

39) तुलसी के काव्य में अर्थ लालित्य
डा० शेषधर उपाध्याय, जौनपूर ||160

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

33

युगल साहित्यकार ममता कालिया एवं रवीन्द्र कालिया की कहानियों में पारिवारिक चित्रण

गोपिरेड्डी लीलावती
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
काकतीय शासकीय महाविद्यालय वरंगल, तेलंगाणा

परिवार एक सार्वभौमिक सामाजिक संस्था है। प्रायः सभी सामाजिक संस्थाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था परिवार ही है। परिवार के सदस्यों में स्त्री और पुरुष दोनों का समान महत्व होता है। किसी एक के अभाव में परिवार नामक संस्था का निर्माण नहीं हो सकता। परिवार में स्थित सदस्यों के बीच पति-पत्नी का संबंध मुख्य होता है। पति-पत्नी संबंध के आंतरिक परिवार में अन्यान्य संबंध भी है जिन्हें हम अनदेखा नहीं कर सकते। पुरुष और स्त्री दोनों के अपने पारिवारिक जीवन में भिन्न-भिन्न रूप है। पिता, पति, भाई और पुत्र के रूप हैं तो स्त्री का माता, पत्नी, बहन और पुत्री। परिवार रूपी रथ का निर्माण पति-पत्नी रूपी पहियों से होता है इससे ही अन्य पारिवारिक संबंधों का निर्माण होता है।

ममता कालिया के नौ कहानी संग्रहों में पाँच संग्रहों 'छुटकारा', 'सीट नम्बर छः', 'एक अदद औरत', 'प्रतिदिन' तथा 'उसका यौवन' को उन्होंने खण्ड-१ में रखा। खंड -२ में 'जाँच अभी जारी है', 'बेलने वाली औरत', 'मुखौटा' तथा 'निर्मोही' इन चार संग्रहों को रखा। जिनमें ममता जी की कुल ११७ कहानियाँ हैं।

रवीन्द्र कालिया के छह कहानी संग्रह 'अकहानी', 'सिर्फ एक दिन', 'डरी हुई औरत', 'बड़े शहर का आदमी', 'टाट के किवाडों वाले घर' और 'बुढ़वा मंगल' है। जिनमें ४८ कहानियाँ स्थित है जो रवीन्द्र कालिया की कहानियों में संग्रहीत हैं।

ममता कालिया की कहानियों के केंद्र में स्त्री जीवन है। स्त्रियाँ भी वहाँ विभिन्न हैं और इनका रचनात्मक निर्वाह भी पर्याप्त भिन्न है। भारतीय परिवार व्यवस्था के मूलभूत सामन्ती ढाँचे में स्त्री का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। ममता ने अपनी कहानियों का प्रारंभ नारी के उस जीवन को लेकर शुरु की, जहाँ उसको एक भोग्या समझा गया। विवाह के पूर्व, इनकी नारी पात्रों में पुरुष समाज को लेकर गहरा आक्रोश है क्योंकि उन्होंने पुरुष समाज की घिसी-पिटी मान्यताओं और रूढ़ियों को अपने जीवन में ढालने से इंकार कर दिया है। यह नारियाँ विवाह के पहले ही अपने अस्तित्व को कायम करने के लिए, अपनी एक अलग पहचान बनाने के लिए कटिबद्ध सी दिखाई देती है। 'फर्क नहीं' कहानी की नायिका अपने स्वतंत्र अस्तित्व के अन्दरूनी संघर्ष का बोध प्राप्त कर लेती है।

'बोलने वाली औरत' कहानी में 'औरत' युवती है और वह नवविवाहिता भी है। 'शिखा और कपिल' ने प्रेम विवाह किया था। जो साल पूरा होते न होते दोनों के बीच नीरसता छा जाती है। भारतीय परिवार-व्यवस्था की मूलबद्ध संस्कारिता यह है कि वह एक अच्छे ख़ासे नवोन्मेष को एक ढर्रे में बदलने पर आमदा है ''शिखा याद करती है वे प्यार के दिन जब उसकी कोई बात बेतुकी नहीं थी। एक इंसान को प्रेमी की तरह जानना और पति की तरह पाना कितना अलग था। जिसे उसने निराला समझा वही कितना औसत निकला। वह नहीं चाहता जीवन के ढर्रे में कोई नयापन सा प्रयोग। उसे एक परंपरा चाहिए, जी हुजूरी की। उसे एक गांधारी चाहिए जो जानबूझकर न सिर्फ अंधी बनी रहे बल्कि गूंगी और बहरी भी।''[१]

इस कहानी के अंत जिस बिंदु पर होता है वह दरअसल एक शुरुआत है। एक व्यक्ति संपन्न स्त्री के स्वतंत्रहीन होने की, जहाँ न केवल उसकी अभिव्यक्ति स्थागित हो गयी है बल्कि एक तरह से उसे 'विदेह' कर देने की व्यवस्था कर दी गयी है, ''शिखा ने पाया परिवार में परिवार की शर्तों पर रहते-रहते न सिर्फ़ वह अपनी शक्ल खो बैठी है, वरन् अभिव्यक्ति भी। उसे लगा वह धूँस ले अपने मुँह में कपडा या सी डाले इसे लोहे के तार से। उसके शरीर से कहीं कोई आवाज़ न निकले। बस, उसके हाथ-पाँव परिवार के काम आते रहे।''[२]

Scanned with CamScanner

ममता कालिया की अवधारणा में कहें तो सास-ससुर अपने, पति अपना, बच्चे अपने - यानि सारा परिवार अपना लेकिन सिर्फ नाम के वास्ते। नारी की इतनी हैसियत नहीं कि वह किसी निर्णय में प्रभावकारी हस्तक्षेप कर सके। कुल मिलाकर अपने घर-परिवार में उसकी स्थिति दोयम दर्जे के नागरिक से बेहतर नहीं होती।

भाग-१ संग्रह की कहानियों में एक कहानी है- 'कवि मोहन'। इस कहानी में एक जवान बेटे की माँ की यह दयनीयता देखने लायक है- ''माँ का चेहरा एक क्षण आशा और अभिमान से दमका, फिर बुझ गया। घर की पूरी अर्थव्यवस्था पिता के हाथ में थी। उसके हाथ में तो चाबियाँ तक न थीं, वह भी पिता के जनेऊ से बंधी रहती थी। ब्याह के २५ साल बद भी उन्हें यह छूट नहीं थी कि वे अपनी मर्जी से देहरी पर आए दीन को एक मुट्ठी चून भी दे सकें।''[३]

परिवार की रूढ़िग्रस्त नीतियों में घर की चारदीवारी में कैद औरत की मानसिक उलझनों का प्रमाण देती है।

ममता जी की शिक्षित नायिकाएँ विवाह के पहले दहेज के रूप में अपनी खरीद बेच सह नहीं पाती। विवाह के विरक्ति का अनुभव करती हैं। 'चिरकुमारी' की नायिका 'दिशा' सोचती है कि- ''कितनी मुश्किल से उसने यहाँ तक का सफर तय किया है कई किस्म की ज्यादतियों और कमियों का मुकाबला उसने अपनी शिक्षा और प्रखर चेतना से किया था। शादी के नाम पर वह अपनी आजादी और आत्मनिर्भरता दाँव पर नहीं लगाना चाहती थी।''[४]

ममता कालिया की कहानियों की नारियाँ परिवार की सीमाओं को लाँघकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध करना चाहती है। 'तस्की का हम न रोये' की नायिका 'आशा' पति के औपचारिक संबंधों में परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्नशील है। पारिवारिक जीवन में सदैव असंतुष्टि का अनुभव करने वाली 'मनहूसाबी' अपने पति से विद्रोह करना चाहती है और आवेश में सोचती कि - ''पति की ओर आँखों से नहीं, अंगारों से देखा।''[५] इसी प्रकार पारिवारिक मोहभंग की स्थिति में संघर्षशील रहने वाली 'जितना तुम्हारा हूँ' की नायिका 'श्वेता' अकेलेपन की पीडाओं को सहकर रसोई और प्रसूतिगृह तक सीमित रहने वाली 'बातचीत बेकार है' की 'विनीता', 'नई दुनिया की' अधूरी 'पूर्वा' और अजनबी बनकर जीवन भर परिवार में पशु स्तर पर जीती रहने वाली 'अट्ठावनवाँ साल' की 'सुषमा' आदि नारियाँ अपने पारिवारिक अस्तित्व की प्राप्ति के लिए पुरुष-प्रदत्त व्यवस्था से विरोध करती है। पति के अहं को क्षीण करके पारिवारिक संतुलन बनाए रखने में उनकी चेतना क्रियाशील बनी रहती है। परिवार के जीवन सूत्रों के बिखरे संबंधों का बेझ उन्हें कब का हो चुका है।

भारतीय परिवार में स्थित सास-बहु के कलहपूर्ण संबंधों का चित्रण भी ममता जी ने अपनी कहानियों में किया है। 'रोएवाली' कहानी की सास ने अपनी सास के कठोर आचरण का प्रयोग अपनी बहु 'कालिन्दी' पर करती है। 'माँ' कहानी भी सास-बहू के संबंधों को परंपरागत पद्धति से चित्रित करनेवाली कहानी है। इस कहानी में एक बेटी अपनी माँ की त्रासदी को आत्मकथात्मक शैली में सुनाती है।

ममता जी रवीन्द्र कालिया के संबंध में बताती हैं कि हम दोनों के विचारों में पर्याप्त भिन्नता होते हुए भी हमारा वैवाहिक जीवन पूर्ण सफल रहा। वे रवीन्द्र जी की कहानियों की भूमिका में लिखती हैं कि ''मेरा ख्याल है रुचियों की यह रगड विचारों का टकराव और जीने का सर्द-गर्म तापमान ही संबंधों की जान है। रवि के साथ रहना कई किस्म के खतरों से, कई स्तरों पर मुठभेड करना है।''[६]

परिवार में पति-पत्नी और प्रेमी-प्रेमिका के बीच आदर्श प्रेम को रवीन्द्र कालिया महत्व देते हैं, जिसका उदाहरण उनकी कहानियाँ 'तफरीह', 'प्रेम', 'सत्ताइस साल का' और 'सन्दल और सिन्थाल' में देखने को मिलता है। 'मददी ने बड़े चाव से अपनी पत्नी को बुलाया था और अब जब उसकी पत्नी को कमजोरी महसूस होने लगी तो वह अपने को कोसने लगा। उसे लग रहा था, भीड़, जान-बूझकर उसे धक्के दे रही है। वह हतप्रभ-सा अपनी पत्नी की तरफ देख रहा था जो सहसा इतनी कमजोर हो गयी थी कि खड़ी नहीं रह सकती थी।''[७] रवीन्द्र जी का विचार था कि सफल दाम्पत्य जीवन के लिए पति-पत्नी एक दूसरे के सुख-दुःख के भागीदार बनें। इस तरह के अनेक उदाहरण उनकी कहानियों में देखने को मिलती है।

'सुन्दरी' कहानी में 'ज़हीर' और 'ज़हीरन' के

बीच पारिवारिक झगड़े इस हद तक होते हैं कि वे अपनी सीमा का उल्लंघन भी कर बैठते हैं परन्तु इसके विपरीत यदि कोई एक बीमार हो जाए तो अपनी घर के प्रति जिम्मेदारी को भी बखूबी से निभाते हैं। ''जब तक ज़हीर अस्वस्थ रहा, जहरिन ने घर का मोर्चा संभाल लिया। वह कामकाजी महिला हो गयी। खाँ साहब के यहाँ से कभी खाली हाथ न लौटती। रात का बचा भोजन वे लोग जहीरन को दे देते। वह बासी भोजन भी बच्चे उंगुलियाँ चाट-चाट कर करतें। जहीर वे भी स्थितियों से समझौता कर लिया था। कुछ तो बिमारी की मार ने और कुछ बेरोजगारी ने उसे विनम्र कर दिया था।''८

मानव जीवन का कड़वा सच जब हकीकत बनकर उनके यहाँ आता है तो लेखकीय संवेदना से भी सीधा साक्षात्कार होने लगता है और रचनाकार की चिंता एवं चिंतन छिपाए नहीं छिपती। व्यक्ति-व्यक्ति, व्यक्ति-परिवार, व्यक्ति-समाज के बीच के संबंधों की जाँच पड़ताल करते समय रवीन्द्र कालिया के अंदर का कथा-विश्व उजागर होने लगता है। साथ ही साथ जीवन-मूल्यों के निरीक्षण-परीक्षण का उपक्रम सामने आता है। वस्तुजगत और मनोजगत के कई सत्यों का नए सिरे से उद्‌घाटन होने लगता है। रवीन्द्र कालिया ने अपनी कहानियों में नारी की निजी संवेदना का कहीं न कहीं उभारकर उन्हें आधुनिक तरीके से व्याख्या की है।

इनकी कहानी 'नौ साल छोटी पत्नी' की 'तृप्ता' अपने पुराने प्रेम को फिर से अंकुरित करना चाहती है। उसका पति 'कुशल' सब कुछ जानते हुए भी उसके समक्ष प्रकट नहीं करता। बल्कि उसे यह अनुभव कराता है कि वह तृप्ता से बहुत अधिक प्यार करता है। पति-पत्नी का एक-दूसरे के प्रति विश्वास से ही परिवार की मज़बूती है। रवीन्द्र कालिया ने 'नौ साल छोटी पत्नी' से ही हिंदी कहानी में प्रसिद्धि प्राप्त की थी। इस कहानी में पति-पत्नी में आयु-भेद के कारण समझदारी के फासले वास्तविकता के धरातल पर व्यक्त हुए हैं।

ममता कालिया 'रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ' की भूमिका में लिखी हैं- ''शुरू से अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि में उद्विग्न व असहमत भूमिका अदा करते-करते रवि की शख्सियत में एक उदास चुप्पी ज़रूरी तौर पर शामिल होती गई है। निम्न मध्यवर्गीय परिवारों में एम.ए. पास लड़कों की बेरोजगारी का छोटे से छोटा वकया भी बहुत लंबा मान लिया जाता है। उस तनाव से अछूता रह जाना रवि के लिए सम्भव नहीं था।''९

ममता कालिया की परवर्ती कहानियों में स्त्री पूरे सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अंकित है। कहानियों का एक विशिष्ट और उल्लेखनीय पक्ष यह है कि वे प्रेम को विवाह में ढालकर और बदलकर भी, किसी मोहभंग का शिकार नहीं होती, और ना ही वे पति और परिवार के निषेध तक जाती है। यानिकि उनकी नायिकाएँ स्थितियों को संभालने में सक्षम रही नज़र आती हैं।

युगल साहित्यकार ने अपनी कहानियों में ब्दलती हुई स्थितियों में हमारे पारंपरिक संबंध साथ ही पारिवारिक संबंध जिस रूप में परिवर्तित हो रहे हैं उन सभी का सूक्ष्म और गंभीर विश्लेषण किया है। पारिवारिक जीवन का यथार्थ चित्रण दोनों ने आँखों के सामने प्रस्तुत कर दिया है। परिवार के पारंपरिक रूप की रक्षा करते हुए उसे नवीन और प्रगतिशील दृष्टि से समन्वित करना इनका उद्देश्य रहा है।

संदर्भ

१. ममता कालिया की कहानियाँ - खंड २, बोलने वाली औरत, पृ. ४३०
२. ममता कालिया की कहानियाँ - खंड २, बोलने वाली औरत, पृ. १३१
३. ममता कालिया की कहानियाँ - खंड २, कवि मोहन, पृ. ३०१
४. ममता कालिया की कहानियाँ - खंड २, चिरकुमारी, पृ. २२४
५. ममता कालिया की कहानियाँ - खंड १, मनहुसाबी, पृ. ३४१
६. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ - भूमिका, रवि पृ. ४
७. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ - तफरीह, पृ. १४६
८. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ - सुन्दरी, पृ. २६०
९. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ - भूमिका, रवि पृ. २

Scanned with CamScanner